٧٨٦/٩٢

نقش تحفۂ روحانی وحل المشکلات

ص م ح م د علیہ وسلم اللہ لی
ص ح م د م علیہ وسلم اللہ لی
ص م د م ح علیہ وسلم اللہ لی
ص د م ح م علیہ وسلم اللہ لی

اس نقش کو دیکھنے والے کی
ہر مشکل حل ہوگی انشاءاللہ

सलातुल मीमिल्अरबईन 2
दुरूदे चहल मीम

पेशकश

बमौक़ा रबीउ़लआख़िर शरीफ़
बफ़ैज़े रूहानी सय्यिदुना मोहयुद्दीन व सय्यिदुना मोईनुद्दीन व हज़रात मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ رضی اللہ عنہم

मोहम्मद अज़ीज़ सुल्तान नाचीज़

آستانہ حضرات مخدومین سادات چودہوں پیراں (علیہم الرحمۃ والرضوان) الہ آباد

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

सुबह़ान क ला इलाह इल्लल्लाहु सुल्ता न क या अल्लाहुर्रह़ीमु स़ल्लि अ़ज़ीमन सलामवं व ब र क तन दाइ मतन अ़ला सय्यिदी व मौलाई नूरिकल मह़ब्बति व मह़बूबि रब्बिल मशरिक़ैनि वल मग़रिबैनि व ऐ़नि ह़याति माफ़िस्समावाति व माफ़िल अरद़ि व रह़मतिल्लिल आ़लमीनल्लज़ी इस्मुहू ह़ामिदूँ व अह़मदु व मह़मूदुन फ़ित्तौराति वल इन्जीलि वज़्ज़बूरि व फ़िल्फ़ुर्क़ानि व कफ़ा बिल्लाहि शहीदम्मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाहि व सय्यिदिल मअ़सूमी न वल मह़फ़ूज़ी न व शफ़ीइ़ल मुज़्निबी न व मग़फ़ि रति क व रह़मति क व क र मि क व इ़ल्मि क व ह़िक्मति क व मज्दि क व अ़ ज़ मति क व अम्रि क व नेअ़मति क व ह़म्दि क व सय्यिदिल ह़ामिदी न व रसूलि रब्बिल आ़लमी नल्लजी जअ़ल्त वालिदैहि अफ़्द़लल वालिदी न व आलहू अफ़्द़लल आलि व अस़्ह़ाबहू अफ़्द़लल अस़्ह़ाबि व उम्म तहू अफ़्द़लल उममि व अ़ला वालिदैहि व आलिही व अहलि बैतिही व अस़्ह़ाबिही बिकुल्लि शअनिन जदीदिन इला अ बदिल आबादि।

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है।

पाकी है तेरी नहीं कोई मअ़बूद सेवाए अल्लाह के बादशाहत है तेरी ऐ रह़म फ़रमाने वाले अल्लाह तू भेज अ़ज़्मतो सलामती और दाइमी बरकत वाला दुरूद मेरे सरदार मेरे मौला अपने नूरे मोह़ब्बत पर और मश्रेक़ैन व मग़रेबैन के पालनहार के मह़बूब पर और आसमानो ज़मीन में जो कुछ है उस की जान पर और उस सारे जहान की रह़मत पर जिनका नाम ह़ामिद, अह़मद और मह़मूद है तौरात व इन्जील और ज़बूर में और फ़ुरक़ान में है“और अल्लाह गवाही के त़ौर पर काफ़ी है मोह़म्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं” और तमाम मअ़सूमों व मह़फ़ूज़ों के सरदार पर और गुनहगारों की सिफ़ारिश करने वाले पर और तेरी बख़्शिश, तेरी रह़मत, तेरे करम,तेरे इ़ल्म, तेरी ह़िक्मत, तेरी बुज़ुर्गी, तेरी बड़ाई, तेरे अम्र, तेरी नेअ़मत और तेरी तअ़रीफ़ पर और तमाम तअ़रीफ़ करने वालों के सरदार पर सारे जहान के पालनहार के उस रसूल पर जिनके वालिदैन को तूने तमाम वालिदैन में अफ़्ज़ल बनाया जिन की आल को तमाम आल में अफ़्ज़ल बनाया और जिनके अस़्ह़ाब को तमाम अस़्ह़ाब में अफ़्ज़ल बनाया और जिनकी उम्मत को तमाम उम्मतों में अफ़्ज़ल बनाया और आप ﷺ के वालिदैन पर और आप ﷺ की आल पर आप ﷺ की अहले बैत पर और आप ﷺ के अस़्ह़ाब पर हर नई शान के साथ हमेश्गी त़ौर पर।

नोटः जो शख़्स़ इस दुरूदे चहल मीम को नक़्श तोह़फ़ए रूह़ानी को पेशे नज़र रखते हुए ४०/७/३ बार पढ़ेगा तो उसे तौबा की नेअ़मत, इ़ल्म का नूर, हुज़ूर ﷺ की ज़ियारतो शफ़्क़त, गुनाहों से नफ़रत, आँखों में ह़या, नफ़्स की पाकीज़गी व जुम्ला ह़ाजाते दुन्यवी व उख़रवी ह़ासिल होगी इन्शा अल्लाहु तआ़ला।